सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप। (LEF,Chennai)

नवम्बर-दिसम्बर, 2004

धार्मिकता का सूर्य

मलाकी (४:२) 'परन्तु तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो धार्मिकता का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों से तुम चंगे हो जाओगे, और तुम गौशाले के बछड़े के समान निकल कर चौकड़ी भरोगे।'

मसीह की तुलना धार्मिकता के सूर्य से की गई है। सूर्य हमें रोशनी और गर्मी देता है। सूर्य जब अपनी पूरी तीव्रता से चमकता है तो धरती के वातावरण में किटाणु मर जाते हैं। मसीह आत्मिक गर्माइश और आत्मिक चंगाई लेकर आये। वह आत्मिक रोशनी लेकर आये। सूर्य धरती के सभी उर्जा स्रोतों का कारण है। सूर्य की उर्जा तेल में, कोयले तथा लकड़ी में समाहित है। इसी प्रकार जो भी आत्मिक रोशनी, उजाला और गर्माइश आप धरती पर पाते हो वह धार्मिकता के सूर्य मसीह के कारण है। शदरक, मेशक और अबीदनगो के साथ अग्नि में मसीह ही थे, जो भी आत्मिक उजाला किसी भी रूप में आया है वह अनन्त मसीह के कारण आया है।

जैसे पूर्व में सूर्योदय होता है और अंधकार ठंड को भगा हवा में गर्मी देता है, वैसे ही जब यीशु मसीह आये तो संसार से भयंकर अंधकार को भागना पड़ा।

मसीह की शिक्षा का असर सारे संसार ने अनुभव किया। भारत में हिन्दु धर्म का सुधार भी इसी कारण हुआ। युनानी लोग मूर्तिपूजक थे, मसीह के आने के २०० साल के भीतर ही उनकी मूर्ति पूजा ढह गई। उन्होंने अपने धर्म को बार-बार सुधारा ताकि वह मसीही धर्म के साथ बना रहे, लेकिन अंत में वह ठहर न सका। मसीही धर्म की रोशनी भेदने वाली ज्योति है। '..जो मेरे नाम का भय मानते हो धार्मिकता का सूर्य उदय होगा..', यह कितना सत्य है!

लम्बे समय से अपेक्षित मसीहा, जिन्होने अपनी रोशनी की किरणें नबियों द्वारा भेजी थी, अब आ गया था। जब मसीह आये तो शुद्ध रोशनी आई। वह आकाश में लालिमा जो सूर्योदय से पहले दिखाई पड़ती है, शुद्ध रोशनी नहीं है. यहां तक कि क्षितिज पर सूर्य भी लाल नज़र आता है क्योंकि वातावरण में धूल कणों से वह रोशनी धरती की सतह के ऊपर आती है। जब नबियों ने बोला तो धरती को रोशनी का कुछ भाग मिला। हम शुद्ध रोशनी तभी पाते हैं जब सूर्य ऊंचा उठता है। जब सूर्य हमारे सिर के ठीक ऊपर पहुँचे, उसे सीधे देख पाना बड़ा कठिन है।

भ्रष्ट याजकों को अपने चेहरे छिपाने पड़े वे यीशु को न देख सके। वे उसकी हत्या कर उसे खत्म करना चाहते थे। लेकिन मानवीय समाज ने उनकी रोशनी की गर्माइश को पाया। जिन्होंने उनकी किरणों को पाया वे उन पर बनी रहीं। यीशु के कहे वचन जो बाइबल में समाहित हैं आज भी लोगों को नई शक्ति देते हैं। यदि हम उन पर मनन करें, धार्मिकता का सूर्य हम पर उदय होता है। जैसे-जैसे आप बाईबल का अध्ययन करते जाते हैं वैसे-वैसे आप उसकी गर्माइश को पाते हैं। चंगाई भी आती है।

जब किसी व्यक्ति के पास परमेश्वर की सच्ची धार्मिकता हो तो वह धार्मिकता के दुश्मनों को कुचल डालता है। यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, लेकिन आज किस पर दण्ड की आज्ञा हुई है? जिन्होंने उसे दण्ड दिया आज उन पर दण्ड की आज्ञा हुई है। जब हम प्रभु के निकट चलते हैं तो चंगाई अपने आप आती है।

'देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। ' मलाकी (४:५) युहन्ना बपतिस्मा देने वाला एलिय्याह था। वह मसीह से पहले आया। वह एलिय्याह की आत्मा के समान आया। जब उसने प्रचार किया तो लोग कांपने लगे। उसे अपने खाने-पहनने की परवाह नहीं थी। उन्होंने जंगली

पृष्ठ २ पर..धार्मिकता का सूर्य।

प्रभु यीशु ने बताया धन्य कौन है।

मत्ती (५:३-१२)

धन्य हैं जो मन के दीनहैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे सान्त्वना पाएंगे।

धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।

धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरूद्ध सब प्रकार की बातें कहें - आनंदित और मग्न हो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान् है।

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

पृष्ठ १ से.धार्मिकता का सूर्य

भोजन खाया तथा बहुत ही सादे कपड़े पहने और यरदन नदी के तट पर जीये। यरदन नदी समुद्रतल से ६०० फीट नीचे बहती है तथा मृत सागर के मुहाने पर १३०० फीट समुद्रतल से नीचे बहती है। यरदन घाटी में अनेक गुफाएँ थीं जिनमें यहूदी याजक रहते थे, लेकिन केवल यहुन्ना बपतिस्मा देने वाले को मसीह का प्रकाशन प्राप्त हुआ और वह सुसमाचार की घोषणा करने लगे। लोग उसे सुनने के लिए इक्ठ्ठा होने लगे। उन्होंने प्रचार किया और बपतिस्मा दिया। उन्होंने कहा वह मसीह नहीं हैं। जब उन्होंने मसीह को देखा तो बोले, 'परमेश्वर का मेमना जो जगत के पाप को उठा ले जाता है।' यीशु उस समय आये जब सारा देश युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार के कारण हिला हुआ था। जब मसीही जीवन स्तर गिरने लगता है, वह परिवार ही है जिस पर प्रहार होता है - वह एकता देने वाला प्रेम तथा अनुशासन खत्म हो जाता है और बच्चें माँ-बाप के विरोध में खड़े हो उठते हैं, घर बरबाद हो जाते हैं। उन ४०० सालों में, नए नियम तथा पुराने नियम के समय के बीच, यहूदी धर्म को कई धक्के लगे।

युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार में सबसे बड़ी रुकावट हेरोदेस का पापमय जीवन था, जो यहूदियों के अराधनालयों का निर्माण कर यह दिखा रहा था कि वह यहूदी धर्म का बढ़ावा कर रहा हो, जबकि वह पाप में जी रहा था। उसे जाकर निडरता से इस बड़े व्यक्ति को लताड़ना पड़ा। इसका परिणाम उसके लिए कैद तथा मृत्यु ठहरी लेकिन सारे देश ने इस चेतावनी का असर महसूस किया।

उसके पश्चात यीशु आये, जो सिद्ध सत्य को लेकर आये। संसार ने कभी ऐसे वचन नहीं सुने थे और न कभी ऐसे नियमित जीवन को देखा था। लोग बड़ी संख्या में उन्हें सुनने के लिए आते और चंगे होते। क्या आपने इस शक्तिशाली जीवन की कुंजी को पाया है?

ऐसा हो कि यीशु इस नए जीवन के सिद्धांतो को और पुनरूत्थान की शक्ति को हमारे अन्दर डालें।

- एन दानिएल।

देने का आनंद - संत क्लाउज़

बहुत समय पहले, लासीया नामक देश में, एक कुलीन व्यक्ति रहता था, उसकी तीन बेटियाँ थीं। वह एक भला व्यक्ति और उदार पिता था, जब उसकी बेटियां नन्हीं थी तो वह उनकी ज़रूरत की सारी वस्तुएं दे पाता क्योंकि वह बहुत अमीर था।

जब लड़कियाँ बड़ी हुईं, परिवार पर मुसीबत आयी और उनके पिता का सारा धन जाता रहा। परिवार इतना गरीब हो गया कि कई बार लड़कियों को भर पेट खाना नहीं मिलता और उन्हें भूखे पेट सोना पड़ता।

समय आया कि लड़कियां विवाह करना चाहती थीं, परन्तु माता-पिता ने उन्हें दुख के साथ यह बताया कि उनके विवाह के लिए उनके पास धन नहीं है। इस बात से लड़कियां बहुत नाखुश हो गईं।

पास ही एक मसीही मठ में निकोलस नाम का एक धर्मी जन रहता था। उसने इस परिवार की दयनीय हालत के बारे में सुना और उसे बड़ा दुख हुआ। उसके माता-पिता अपने देहान्त से पहले उसके लिए कुछ धन-संपत्ति छोड़ गये, लेकिन उसे लगा कि अपने ऊपर इस धन को खर्च करना सही नहीं है। वह लोगों से प्रेम करता था, क्योंकि वह यीशु से प्रेम करता था, और वह ऐसे काम करना चाहता था जो स्वंय यीशु करना चाहेंगे।

''देखो एक परिवार है जिसकी मुझे सहायता करनी चाहिए'', निकुलस ने सोचा, 'लेकिन मैं ऐसे सहायता करूं कि उन्हें पता न चले, नहीं तो वह मेरा धन्यवाद करना चाहेंगे। परमेश्वर ने यह धन मुझे धरोहर में इसलिए दिया है कि मैं दूसरों की सहायता कर सकूं। यह परमेश्वर हैं जिसका लोगों को धन्यवाद देना चाहिए।'

तब वह गया और अपनी तिज़ोरी में से सोने के सिक्कों से भरी थेली को गिन ले आया। उसने संध्या होने की प्रतीक्षा की और फिर वह अंधेरे में निकल पड़ा।

जैसे वह उस कुलीन व्यक्ति के घर के पास पहुंचा, उसने चांद की रोशनी में देखा कि घर की एक खिड़की खुली है। उसने उस खिड़की से सोने से भरी थेली को डाल दिया और मुड़ कर तेजी से चला गया।

जब उस कुलीन व्यक्ति ने सोने की थैली को ज़मीन पर पड़ा पाया तो उसे बड़ा अश्चर्य हुआ।

'यह कहाँ से आया होगा', उसने पूछा, लेकिन किसी ने निकुलस को नहीं देखा था, कोई उसे कुछ बता नहीं पाया। 'यह भेंट ज़रूर किसी भले आदमी से आयी है,' उसने सोचा और क्योंकि वह स्वंय भला आदमी था उसने वह सोना अपनी सबसे बड़ी बेटी को दे दिया। वह बहुत खुश हुई। अब उसके पास पैसा था और वह विवाह कर सकती थी।

कुछ रातों के बाद निकुलस दुबारा उस घर को सोने से भरे दूसरे थैले के साथ गया, और पहले के समान खुली खिड़की से थैला अन्दर डाल दिया। दुबारा उसने यह निश्चित कर लिया था कि कोई उसे देख न सके। जब कुलीन व्यक्ति ने सोने को पाया तो वह पहले से अधिक असमंजस मे पड़ गया। वह भेंट उसने अपनी दूसरी बेटी को दे दी और उसकी बेटी बहुत खुश हुई। अब वह भी विवाह कर पाएगी। कुलीन व्यक्ति ने निर्णय किया कि वह आगली कुछ रातें निगरानी करेगा और देखेगा कि वह उसका दयालू मित्र कौन है।

जब निकुलस तीसरी बार आया, लड़कियों का पिता उसके लिए तैयार था। जैसे ही निकुलस जाने के लिए मुड़ा, कुलीन व्यक्ति ने अंधेरे से बाहर आकर उसके कपड़े पकड़ लिए। वह उसे चाँद की रोशनी में ले आया।

'क्यों! यह तो निकुलस है, परमेश्वर का सेवक!' वह अश्चर्य से भर कर बोला। 'तुम अपने आप को ऐसे क्यों छिपाते हो?'

निकुलस ने जवाब दिया कि वह नहीं चाहता कि संसार उसके कामों को देखकर उसकी प्रशंसा करे। 'वह परमेश्वर ही हैं जिन्होंने मुझे तुम्हारे पास भेजा क्योंकि उन्होंने ही यह विचार मेरे मन में डाला। तुम्हें उन्हीं को धन्यवाद देना चाहिए,' यह कह कर बात पूरी की।

सो इस प्रकार कुलीन व्यक्ति और उसकी पत्नी को अपनी तीनों बेटियों को विवाह के लिए सुन्दर उपहार देने का अवसर मिला और वह सब बेहद खुश थे! लेकिन वह जिसे सबसे बढ़कर खुशी थी वह स्वंय निकुलस था, क्योंकि उसने इस रहस्य को पा लिया था कि दूसरों के खुश करने से बढ़कर कोई और आनन्द नहीं है।

बाद में निकुलस माइरा के बिशप बने और अपने जीवन को दूसरों की मदद करने में बिताया। उनकी मृत्यु के कई वर्षों पश्चात्त, उन्हें संत की उपाधि दी और अब वह संत निकुलस कहलाते हैं।

संत निकुलस की कहानी संसार के अनेक भागों में फैली और दूसरे लोग उनके नेक कामों को दोहराना चाहते थे। इसलिए जब बच्चों को क्रिसमस के अवसर पर भेंट मिलती है और जब वह यह नहीं देख पाते कि यह भेंट कौन लेकर आया है, यह कहा जाता है कि सांता क्लाज़ (संत निकुलस) लेकर आये हैं। सांता क्लाज़, संत निकुलस का ही दूसरा नाम है और लाल पोशाक में वह सारे संसार में जाने जाते हैं। कई लोग उन्हें पिता क्रिसमस कह कर बुलाते हैं, चाहे उन्हें किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाए, उनके भले कामों को याद कर लोग उनका अनुसरण करके उनकी भाँति दूसरों के लिए बिना बताए भेंट छोड़ जाते हैं।

- चुना हुआ।

Beautiful Books

First Floor, Victoria Hotel
Near GPO
CST, Mumbai
Phone : (022) 5633 4763
9:30 AM - 7:00 PM, Sunday Closed

तीन बुद्धिमत्ति महिलाएं

तीन बुद्धिमान पुरुष : कैसपर, मेलकिऔर बालथासर। क्रिसमस की किंवदंतियों मे यह तीन प्रिय चरित्र हैं। सदियों से इन तीन रहस्मय चरित्रों ने हमारी कल्पनाओं को लुभाया हुआ है और हमारी बेतलैहम की आत्मिक यात्रा में 'सितारे की खोज' को उत्साह से भरा हुआ है। यह सच है कि उन ज्योतिषियों केक्या नाम थे, हमें नही पता और न ही यह कि वह गिनती में तीन थे या नहीं।

लेकिन हम यह ज़रूर जानते हैं कि वहाँ तीन बुद्धिमत्ति महिलाएं थीं : मरियम, एलशिबा और हन्ना -- तीन बड़ी भिन्न महिलाएं, अलग आयु तथा अलग जीवन के चरण में। लेकिन यह सारी महिलाएं 'परमेश्वर का भय मानती थीं' और हरेक ने क्रिसमस की घटना में एक खास चरित्र निभाया है। हरेक ने, अपनी ही रीति से, आज हमारे अनुसरण के लिए एक शक्तिशाली उदाहरण रखा है।

मरियम -

वह एक ज़वान लड़की थी, किशोरी, जिसका विवाह होने वाला था। वह अपने भविष्य की दहलीज़ पर थी, अपने भविष्य के प्रति आशाओं और सपनों से भरी। उसका अधिकतर समय विवाह की तैयारी में बीत रहा था। जब स्वर्गदूत आया, वह ऐसा संदेश लेकर आया जो उसके जीवन को हमेशा के लिए बदल देगा। उसने मरियम को कहा कि वह 'परमेश्वर की प्रिय' है। परमेश्वर ने उसे अपने बटे को धारण करने के लिए चुना था। अब से लेकर सारी पीढ़ियां उसे धन्य कहेंगीं।

कैसा विस्मयपूर्ण विषेशाधिकार! कितनी बड़ी जिम्मेवारी।

उस क्षण मरियम ने सोचा भी न होगा कि इसे पूरा करने में क्या आवश्यक होगा। उसने एक स्वाभाविक प्रश्न किया : ''यह कैसे संभव है?'' हम स्वर्गदूत के उत्तर को देखते हुए यह कह सकते हैं कि उसने यह प्रश्न संदेह या संशय करते हुए नहीं पूछा। मरियम ने किसी चिन्ह की माँग नहीं की, किसी प्राकार के प्रमाण या अतिरिक्त सबूत की। उसके जीवन को बदलने वाली इस घटना को लेकर उसने कोई शिकायत नहीं की। वह अब जानती थी कि जैसी उसने योजना बनाई थी, उसका जीवन उस प्रकार का नहीं होगा। परन्तु उसके मन में किसी प्रकार का विरोध या विद्रोह नहीं था। केवल मीठा, सरल समर्पण - परमेश्वर की इच्छा के सामने समर्पण।

'मैं प्रभु की सेविका हूँ', उसने उत्तर दिया, 'जैसा आपने कहा मेरे साथ वैसा ही हो' (लूका १:३८)

सार में उसने स्वर्गदूत को यह कहा कि परमेश्वर उसका जैसे चाहें वैसे उपयोग करें, क्योंकि वह इच्छुक पात्र है, पूर्ण रूप से परमेश्वर को उपलब्ध। परमेश्वर के मन को कितना आनन्द पहुँचा होगा। इसमें अश्चर्य की बात नहीं कि, क्यों उन्होंने इस बहुमूल्य जवान कुवांरी को ही अपने पुत्र की माता होने के लिए चुना।

परमेश्वर आज भी ऐसे लोगों की खोज में हैं जो मरियम की भाँति पूरी तरह से उन्हें उपलब्ध हों। यदि हम अपने मन, सपने और आशाओं को समर्पित करने को तैयार हैं, वह कहते हैं कि वह हमारा उपयोग महान चीज़ों को पूरा करने में करेंगे।

इलशिबा -

एक ऐसी संस्कृति में, जहाँ महिलाओं का मूल्य, उसकेबच्चों की संख्या द्वारा आंका जाता था, वह एक बाँझ थी। वह ऐसे दिनों में बांझ थी, जब बच्चे न पैदा होना परमेश्वर के दण्ड का सूचक - एक शाप माना जाता था। उसने और उसके पति ने पूरे मन के साथ एक बच्चा पाने के लिए प्रार्थना की थी, लेकिन अब उसके बच्चा पैदा होने की उम्र गुज़र चुकी थी। इलशिबा के पास कड़वाहट से भरने का हर कारण था, लेकिन इसके बजाय वह निर्दोषी रह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करती रही (लूका १:६)। वह वफादारी से आज्ञापालन करती रही, ऐसे समय में भी जब वह परनेश्वर की इच्छा को न समझ सकी। वह लगातार अपने मन का सारा बोझ परमेश्वर के सामने प्रार्थना में उड़ेलती रही, जब कि ऐसा प्रतीत हो रहा था कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना न सुन रहे हों।

तब चमत्कारी रूप से परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और वृद्धावस्था में इलशिबा के गर्भ धारण हुआ। वह जानती थी कि उसके जीवन में परमेश्वर का हाथ आलौकिक काम कर रहा था। जब उनकी रिश्तेदार मरियम अनपेक्षित रूप से उनके यहाँ आयी, इलशिबा उनके आने का कारण जानती थी। इलशिबा ने परमेश्वर की आवाज़ को सुना था। वह परमेश्वर के पवित्र आत्मा के अनूकूल चल रही थी।

उस महिला के अधिकार से, जिसने परमेश्वर की वफादारी को चखा था, वह आनन्द से भर मरियम को बोली, 'धन्य है वह स्त्री जिसने विश्वास किया कि जो कुछ प्रभु ने उस से कहा है वह पूरा होगा।' (लूका १:४५)

उस क्षण में, इलशिबा ने आत्मिक माता या धार्मिक सलाहकार का कर्तव्य निभाया। उसने नौज़वान लड़की का उत्साह बढ़ाया, जो बढ़ा अकेला महसूस कर रही थी। इलशिबा ने मरियम को स्वीकारा और परमेश्वर के वचने को उसके लिए निश्चित किया। यदि मरियम के मन में कोई संदेह या भय भी था, तो इलशिबा ने आनन्द से परमेश्वर के प्रेम तथा वफादारी को उसे याद दिला कर दूर किया।

इलशिबा की तरह, आओ हमारा मृमभेदी दुख हमें परमेश्वर के निकट लेकर आये न कि हमें उनसे दूर भगाये। हमें उनकी आवाज़ सुनने की और उनकी अगुवाई के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। जब भी हमें अवसर मिले हमें, विश्वास में नये लोगों का उत्साह बढ़ा कर, अवसर का लाभ उठाना चाहिए। हम अपने व्यक्तिगत अनुभव से उन्हें यह दिखा सकते हैं कि परमेश्वर वफादार हैं।

हन्ना

८४ वर्ष की आयु, वह अपने जीवन के अन्त की ओर पहुंच रही थी। निःसंदेह हन्ना अपने अधिकतर मित्रों तथा रिश्तेदारों से ज्यादा दिन जीवित थी। उसके अपने पति का देहान्त ६० साल से भी पहले हो चुका था। उनके विवाह के ७ साल पश्चात्। उसकी देखभाल के लिए जवान बच्चे नहीं थे। चाहे कारण कुछ भी रहा हो उसने पुनः विवाह नहीं किया। संस्कृति महिलाओं को व्यवसाय करने की आज़ादी नहीं देती थी। इस कारण हन्ना के पास काफी खाली समय था।

वह चाहती तो अपना सारा समय बीते हुए दिनों ओर पुरानी यादों में बिता सकती थी। वह कहावती रूप की व्यस्त महिला बन सकती थी - घर-घर जाकर गप्पें मारना तथा दूसरों की बातों में अपनी नाक डालना, ऐसे कामों में अपना समय बिता सकती थी। वह चाहती तो अपनी ड्योढ़ी पर बैठ सारा दिन अपने पड़ोसियों को अपने शरीर के दुख-दर्द तथा बुढ़ापे की समस्याओं के विषय में बताती रहती। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

इसके बदले, उसने परमेश्वर से प्रेम करने में अपने को समर्पित कर दिया। केवल परमेश्वर से प्रेम करने में। उसके सान्निध्य में समय बिताती। जैसे-जैसे साल बीतते गये, उसने अपने को अधिक से अधिक परमेश्वर की सेवा में लगाया। 'तब वह ८४ वर्ष की आयु तक विधवा रही। और वह मन्दिर को कभी नहीं छोड़ती वरन् रात-दिन उपवास और प्रार्थना करके सेवा में लगी रहती थी।' (लूका २:३७)

पवित्र बाइबल हमें बताता है- परमेश्वर उसका आदर करते हैं जो उनका आदर करता है। उन्होंने अपनी सेविका को वह देखने को लम्बी आयु दी - जो पुराने समय में बहुत से लोग उसे देखने की इंतजार में मर गये - मसीह का आगमन। वह वहां अराधनालय में थी, जहां वह हमेशा होती थी, जब शिशु (यीशु) का अर्पण हुआ। इस धन्य घटना का उसने वैसे ही अभिवादन किया जैसा वह हमेशा करती थी - 'उसने धन्यवाद दिया' (लूका २:३८)। तब उसने उन सबको, जो उसकी सुनने को तैयार थे, परमेश्वर की महानता तथा वफादारी के विषय में बताया।

हन्ना वैसी महिला थी, जिसने बुरी परिस्थित का भलाई के लिए उपयोग किया। वह अपनी आशिष गिनती रहती थी। इसका परिणाम यह निकला, उसके मन में परमेश्वर के प्रति आभार उमड़ता था। अनुगृह के साथ बूढ़े होना सीखो। हन्ना ने हमें यह दिखाया कि चाहे हम कितने ही बूढ़े क्यों न हो जाएं, हमें परमेश्वर के साथ चलने वाले जीवन से पीछे नहीं हटना चाहिए। हमें कड़वाहट में नहीं, बल्कि भलाई में आगे बढ़ना चाहिए। हम अपने दुखों की बजाय आशिष को गिनने की ठान सकते हैं। हम हमेंशा परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं।

तीन बुद्धिमत्ति महिलाएं : मरियम, इलशिबा और हन्ना। जैसे ज्योतिषियों ने सितारे का पीछा किया, हम इन महिलाओं के तेजोमय उदाहरण का अनुसरण कर 'पवित्र तथा परमेश्वर को खुश करने वाला जीवन बिता सकते हैं' (रोमियों १२:१)। एकप्रसिद्ध क्रिसमस शुभकामना पत्र में लिखा है - 'बुद्धिमान लोग अब भी उसे(यीशु)खोजते हैं'। सच यह है कि बुद्धमत्ति महिलाएं भी उसे (यीशु) खोजती हैं।

- क्रिसटिन डिकफील्ड।

सत्य की परख!

गुणवत्ता का महत्व है - 'गुणवत्ता कोई संयोग नहीं है, वह परिणाम है - उच्च इच्छा, गंभीर प्रयास, बुद्धिमान दिशा और निपुण कार्यवाही का, यह दर्शाता है - कई विकल्पों में से सही का चुनाव। - '

'इसलिए जो भी इन छोटी से छोटी आज्ञाओं को ताड़ेगा और ऐसी ही शिक्षा दूसरों को देगा, वह परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा कहलाएगा, परन्तु जो उसका पालन करेगा और दूसरों को भी सिखाएगा, वह परमेश्वर के राज्य में महान् कहलाएगा। मत्ती (५: १९)'

पृष्ठ ३

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर सैंकी का गीत

एक नाटे, मूछों वाले व्यक्ति अधीर हो, डेलवारे नदी में नौका पर चहल-कदमी कर रहे थे। वह अपने कोट के बटन खोले थे और बार-बार भौं से पसीना पोंछने के लिए अपनी टोपी उतारते। वह अपनी पैंतीस वर्ष की आयु से कहीं बड़ कर दिख रहा थे।

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर इतनी गर्मी बेमौसम नज़र आ रही थी।

उनकी निगाह पास से गुज़रते पैनस्लीवैनीया के तट पर लगी थी। वह अपने परिवार के बारे में सोच रहा थे, जो वहां से पश्चिम में लगभग ३०० मील दूर न्यूकास्ल में था। यदि उन्हें फिलेडेलफिया में आगे की गाड़ी नहीं मिलेगी तो इस क्रिसमस पर वह अपने परिवार से नहीं मिल पाएंगे। १८७५ का क्रिसमस।

'माफ कीजीए, श्रीमान'

'क्या आप इरा सैंकी तो नहीं, सुसमाचार गीत गायक?' वह उस महिला और उसके पति को देख कर मुस्कुराये...उन्हें लगा कि शिष्टाचार के नाते वह यह मान ही लें कि वह ही इरा सैंकी हैं।

'हमने आपकी तस्वीर समाचार पत्रों में देखी है।'

वह लोगों के द्वारा पहचाना नहीं जाना चाहते थे, कम से कम आज नहीं, इस रात नहीं। वह थके और झुंझलाये हुए थे और उन्हें गर्मी लग रही थी। सच्चाई तो यह थी कि वह श्रीमान मूडी से नाराज़ थे।

'हमने सोचा आप अभी भी इंगलैण्ड मे होंगे।', महिला ने कहा। 'हम पिछले सप्ताह लौटे, महोदया।', श्रीमान सैंकी ने अपने गुंजायामान मध्यम सुर में उत्तर दिया। यदि श्रीमान मूडी ने और अधिक सभाओं तथा सम्मेलनों का आयोजन न किया होता तो इस समय वह क्रिमसम के लिए अपने घर, अपने परिवार के पास पहुँचे हुए होते। इसके बदले वह इस नौका में एक बन्दी समान थे।

'श्रीमान सैंकी, क्या आप हमारे लिए गाएंगे? यह क्रिसमस की पूर्व संध्या है और हम आपको सुनने के बहुत इच्छुक हैं।'

श्रीमान सैंकी ने हामी भरी कि वह गाएंगे और इस बात की घोषणा जहाज़ पर जोर-शोर से कर दी गई। जब लोग एकत्रित हो रहे थे तो वह इस विचार में थे कि कौन से गीत गायें। उन्होंने सोचा काश उनके पास पोर्टेबल बाजा होता जो उनके गायन का अटूट भाग बन चुका था। लेकिन कोई बात नहीं, वह बिना संगीत के क्रिसमस के एक दो गाने गाएंगें। शायद वह साथी यात्रियों को भी अपने साथ गाने के लिए कहें।

उन्होंने अपनी निराशा को दूर करने की कोशिश की। वह विख्यात व्यक्ति थे, चाहे उन्हें यह पसंद था या नहीं और अधिकतर अपनी योग्यता को लेकर वह शर्माते नहीं थे। दो महाद्वीपों पर वह सुसमाचार गायक के रूप में जाने जाते थे, गीत लीडर और श्रीमान डवाइट मूडी के साथ अकेले गाने वाले, जो अपने समय के सबसे जाने माने सुसमाचार प्रचारक थे। शायद यह परमेश्वर की ही उनके लिए इच्छा थी कि वह इस स्थान पर, इस नौका पर और खास इस समय, यहां हों।

'मैंने सोचा था कि मैं क्रिसमस के एक दो गीत गाउँगा', वह फिर बोले, 'लेकिन मैं महसूस कर रहा हूं कि मैं दूरसा ही गात गाऊँ।'

'आप अपना लिखा गीत गाओ।', कोई भीड़ में से चिल्लाया। 'नव्वे-और-नौ वाला गाओ।', दूसरे ने आदेश-सा देते हुए कहा।

'नहीं, बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं जान गया हूं कि मुझे क्या गाना है।' वह अब मुस्कुरा रहे थे, पहले से बेहतर महसूस कर रहे थे अपने विषय तथा परिस्थिति में, अपने श्रोताओं के बीच खुशी महसूस करते हुए। 'मैं विलियम ब्रेडबरी द्वारा लिखा गीत गाऊंगा। यदि आप इस गीत को जानते हैं और मुझे पक्का विश्वास है आप में से बहुत से इसे जानते हैं, मेरे साथ गुनगुनाइये।'

सैंकी ने गाना आरंभ किया।

(Saviour like a shepherd...)

प्रभु यीशु मेरे प्रिय
लोगों के तारणहार
अपने प्राण को तू ने दिया
कि हमारा हो उद्धार
को. प्रभु यीशु, प्रभु यीशु
सब का तुझ से हो उद्धार.....

उन्होंने पूरे तीन पद गाये. वहां अनोखी चुप्पी छा गई और इरा सैंकी को लगा अब कुछ और गाना सही नहीं होगा। इसलिए उन्होंने लोगों को क्रिसमस की बधाई दी और लोगों ने भी उसके उत्तर में बधाई दी। लोग चले गए और वह अकेले रह गए।

'आपका नाम इरा सैंकी है?'

'हां।' उन्हें न तो व्यक्ति और न उसकी आवाज़ पहचान में आई। वह व्यक्ति छाया में से बाहर आया। वह लगभग उनकी आयु का था, उसकी दाढ़ी सफेद होने लगी थी, वह ठीक-ठाक पोषाक पहने था, तुनकमिज़ाजी नहीं। शायद वह विक्रय व्यापार में था।

'श्रीमान सैंकी, क्या आप कभी सेना में सेवारत थे?'

'हाँ मैं था। १८६० में मैं भरती हुआ था।'

'क्या आपको १८६२ का समय याद आता है। क्या आपने कभी पहरेदारी का काम संभाला था, रात के समय मैरीलैण्ड में?'

'हाँ, मैने किया था।' सैंकी को अचानक याद आया और उनका मन उत्तेजित हो उठा, 'शायद यह शार्पस्बर्ग की बात हो।'

'मैं भी सेना में था। 'यूनियन सेना' में। और उस रात मैंने तुम्हें देखा था।'

सैंकी ने उसे गौर से देखा।

'तुम अपनी नीली वर्दी में कवायद कर रहे थे। तुम मेरे निशाने की सीध में, पूर्णिमा की रात पूरे चाँद की रोशनी में, जो तुम्हारी बेवकूफी थी, और तुम यह समझ सकते हो, खड़े थे।' , वह आदमी बोलते हुए ठहरा,'तब तुम गाने लगे।'

अश्चर्यजनक रूप से सैंकी को याद आया।

'तुमने वह गीत गाया जो आज रात गाया। ..प्रभु यीशु मेरे प्रिय..'

'मुझे याद है।'

'मेरी माँ यह गीत बहूदा गाया करती थी, लेकिन मुझे यह आशा नहीं थी कि कोई 'यूनियन सिपाही' रात में पहरेदारी करते हुए इस गीत को गाये।', उस अजनबी ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा, 'और यह स्पष्ट है कि मैने तुम्हें नही मारा।'

'स्पष्ट रूप से मैं आपका आभारी हूँ।' सैंकी मुस्कुराया।

'मैं हमेशा इस बात को लेकर अचंभित था कि तुम कौन हो। वह कौन था जिसे उस रात मैंने नही मारा, उस 'संडे स्कूल' के गीत गाने के कारण।'

सैंकी ने अपना सिर झटका।

'यह सच है कि आज रात तक 'इरा सैंकी' नाम का मेरे लिए कोई खास महत्व नहीं था। शायद मैं उतने अच्छे से अखबार नहीं पड़ता जितना मुझे पढ़ना चाहिए। मुझे मालूम नहीं था कि तुम इतने विख्यात हो जाओगे।' वह आदमी पहली बार मुस्कुराया, 'लेकिन मुझे भरोसा था कि मैं उस चेहरे और आवाज़ को कहीं भी पहचान लेता।'

सैंकी ने मन में सोचा कि उस रात का कुछ और ही नतीजा निकल सकता था।

'क्या तुम सोचते हो कि मैं तुमसे बात करने के लिए तुम्हारा कुछ समय ले सकता हूँ?' व्यक्ति ने पूछा, 'मैं सोचता हूं, तुम्हारे थोड़े समय पर मेरा हक है। मेरे बीते हुए जीवन में कुछ भी ठीक नहीं घटा। युद्ध से पहले भी नहीं, युद्ध के समय भी नहीं और उस समय से लेकर अब तक भी नहीं।'

इरा सैंकी ने अपने पुराने दुश्मन के कंधे पर हाथ रखा। नाव के उपरी भाग पर वह एकशांत कोने में बैठ कर बातें करने लगे। सैंकी की अशांति और गुस्सा दूर हो चुके थे। वह इस बात से अब विचलित नहीं थे कि शायद उन्हें अपने परिवार को मिलने में देरी हो जाए। जल्द क्रिसमस आने वाली थी। वह दिन हमेशा आता था, परन्तु कभी-कभी अजीब रीति से।

वह रात अब भी गर्म थी लेकिन मानो चमकते सितारों से भरी। सैंकी को लगा कि उसने स्वर्गदूतों की आवाज को सुना, गाते हुए और सुसमाचार को गाते हुए।

-चुना हुआ।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।